राजस्थानः शैक्षिक सामाजिक पड़ताल

प्रेमपाल शर्मा

राजाराम भादू दशकों से शिक्षा के मोर्चे पर सक्रिय है। शोधकर्ता, शिक्षक, लेखक, संपादक, एक्टिविस्ट- सभी रूपों का घोल। मेरी रुचि इनके लेखन में जगी सामाजिक स्थितियों के विवरण पढ़कर। एकनिष्ठ, एकाग्रता से किये अध्ययन भले ही सक्षिप्त हैं, लेकिन किसी को भी बैचेन कर सकते हैं। मेरे जन्म, बचपन के प्रदेश उत्तर प्रदेश के अनुभवों को साथ-साथ तौलते हुए। यह भी कि कम से कम पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वंचित समुदायों के बारे में इतने आकड़ों के साथ कोई अध्ययन मेरी नजर से नहीं गूजरा। वहां की आर्थिक-सामाजिक विपन्नता तो और भी भयानक है लेकिन विमर्श के नाम पर सवर्ण-दलित गालियां पूरे माहौल में ज्यादा छितरायी रहती हैं बजाय इस असमानता के मूल कारणों को जानने के। इसीलिए '***हाशिए के समुदायों में शिक्षा***' नामक किताब के सभी अध्यायों को मैंने चाव से पढ़ा। मुख्य रूप से जो समुदाय इस पुस्तक में शामिल हैं वे हैं- सपेरा बस्ती, बावरिया, कीर-फकीर, बंजारे, कथौड़ी और पूरे विस्तार के साथ मेवात क्षेत्र का शैक्षिक परिदृश्य।

पहले बात मेवात क्षेत्र की। जनता मेवात को हरियाणा राज्य में मुसलमानों की घनी आबादी के क्षेत्र के रूप में जानती है। दिल्ली के अखबारों इण्डियन इक्सप्रेस, हिन्दू आदि में भी पिछले कुछ वर्षों में ऐसी रपटें छपी हैं जो बताती हैं कि शायद भारत में सबसे ज्यादा निरक्षर आबादी यहीं है विशेषकर महिला-निरक्षरता दुनिया भर में अव्वल। पुस्तक में दिए आकड़ों के अनुसार साक्षरता मात्र 22 प्रतिशत। कई जगहों पर अभी भी आठवीं पास लड़की मुश्किल से मिलती है। जानकारियों का पिटारा कि मेवात क्षेत्र उत्तर प्रदेश में मथुरा से लेकर राजस्थान में अलवर, भरतपुर तक फैला है कि 'मेवों ने 16वी सदी में मुस्लिम धर्म दिल्ली के सूफियों के संपर्क में अपनाया' था। ये अभी भी 'हिन्दुओं की तरह गोत्रों व पालों को मानते हैं।' इन्हीं कारणों से मुख्यधारा के मुसलमाल इन्हें 'शुद्ध' नहीं मानते। विडम्बना यह भी कि ये भी बढ़ई, नाई, फकीर आदि को हिन्दू सवर्णों की तर्ज पर नीचा मानते हैं (पृष्ठ-43)। शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक धार्मिक अवरोधों की तरफ राजाराम ने एक निडरता से इशारा किया है। 'मजहबी तालीम' जरूरी है जो स्थानीय इमामों के शिकंजे में है और मदरसा अनिवार्य। मेवात में मस्जिद मदरसों का जाल फैला है, जिसकी वजह से आधुनिक शिक्षा भी नहीं फैली और बच्चों को दीनी तालीम तक सीमित कर दिया है। 'मेवात शोशल एजुकेशन डेवलपमेंट सोसायटी के प्रगतिशील कामों के सामने भी ये मौलवी अवरोध पैदा' करते रहे है (पृष्ठ 50)।

मेवात की स्थितियों को जानकर अफसोस और ज्यादा इसलिए भी होता है कि देश की राजधानी से मात्र पचास-सौ किलोमीटर की दूरी पर एक समाज में इतना घना अंधकार है और हम दशकों से सिर्फ लेख लिखे जा रहे हैं। दिल्ली में सरकार भी है मुल्ला, मौलवी, बुद्धिजीवी भी-सभी समुदायों के। विस्तृत पड़ताल की गई है। सुझाव भी दिए हैं, लेकिन अमली जामा पहनाने की हिम्मत उस सरकार में भी नहीं थी। जिन्होंने सच्चर समिति को नियुक्त किया था और न दूसरी सरकारों में। यों दिल्ली में कभी-कभी सेमीनार के लिए कुछ आंकड़ों की जरूरत जरूर पूरी करती है यह रिपोर्ट।

पुस्तक : हाशिये के समुदायों में शिक्षा
लेखक : राजाराम भादू
प्रकाशक: अन्यन्य प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य (हार्ड बाईंड) : 250। **पृष्ठ :** 128

सपेरों, कीर-फकीर आदि पर किए अध्ययन में कुछ बाते कॉमन हैं और सबसे महत्वपूर्ण है शिक्षा के प्रति पूरी उदासीनता। क्यों भेजे स्कूल? खाएंगे क्या? बच्चों के प्रति मां-बाप और सभी का यह रवैया है इसीलिए समाज के साथ उन्हीं कामों में जुट जाते हैं। मुश्किल से समान्तर जैसी संस्थाओं के समझाने पर स्कूल तक कुछ प्रतिशत ही ले जाना संभव हो पाया है। स्पष्ट है ऐसे सभी समाज अंधविश्वास, शराबखोरी की गिरफ्त में हैं। सभी के अपने कुल देवता-देवियां हैं। कीरों के कालूव बाबा, भैंरो बाबा, तो दूसरों के दुर्गा, मूंगा, भौमिया। अशिक्षित समाज की पहली पहचान और इस अंधेरे में देश हजारों साल से डूबा है। अंधविश्वास शैक्सपीयर के नाटकों और यूरोप के उपन्यासों में भी है लेकिन विज्ञान ने उन्हें तो मुक्ति दिला दी। भारत में यह रोशनी पढ़े-लिखे डिग्री धारकों तक भी नहीं पहुंची बल्कि पिछले कुछ वर्षों में- प्रसिद्ध वैज्ञानिक जयंत नार्लीकर के शब्दों में, 'ज्योतिष, अंधविश्वास, बाबावाद, काला जादू और ज्यादा फैले हैं?' फिर ये वंचित समुदाय भी क्या करें? क्या हुआ नेहरू जी की वैज्ञानिक चेतना का? क्यों नहीं फैला पाई वह सत्ता जो आजादी के पच्चीस-तीस साल तो निशंक शासन कर रही थी। अंत तो सब का वैसे ही राम भरोसे है। राधास्वामी, साईंबाबा, संतोषी माता नए मध्यवर्ग के बाबा-पीर हैं।

मेरी रुचि समाज में है इसीलिए ये जानकारियां और रोचक लगती हैं जैसे कथौड़ी समुदाय अपने मुर्दों को दफनाते हैं, जलाते नहीं। ज्यादातर इस वंचित समुदाय में वर पक्ष लड़की वालों को पैसा देता है। सुन रहे हो मध्यवर्ग के रईसो, अफसरो, सवर्ण, दलित पिछड़े सभी। दहेज संविधान की सैकड़ों अन्य धाराओं की तरह ही अपराध जरूर घोषित है जमीन पर नहीं। राजाराम के अध्ययनों से पाठक अपने-अपने क्षेत्र में ऐसे शोध के लिए तो प्रेरित होंगे ही। हालांकि कुछ और गहरे उतरा जाता, समय-सापेक्ष अध्ययन होता। साक्षात्कार, नौकरशाही, सत्ताओं के बदलने के संदर्भ में तो अवरोधों पर और रोशनी पड़ती। विवरणों के दुहराव से बचने के लिए ये सभी एक अध्ययन में समेटे जा सकते हैं।

विज्ञापन

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

लाइब्रेरी एडुकेटर सर्टिफिकेट कोर्स 2018 (हिन्दी)

पराग का लाईब्रेरी एडुकेटर कोर्स अपनी तरह का अलग कार्यक्रम है। यह पुस्तकालय कर्मियों, शिक्षकों व उन सभी लोगों के व्यावसायिक विकास के लिए है जो बच्चों व किताबों के साथ काम करते हैं। यह कोर्स प्रतिभागियों को सक्रिय एवं रचनात्मक पुस्तकालयों की कल्पना व संचालन में समर्थ बनाता है साथ ही यह बच्चों के साथ प्रभावी पुस्तकालय सत्र डिजाइन करने के उनके कौशल को विकसित करता है।

लाईब्रेरी एडुकेटर सर्टिफिकेट कोर्स 2018 के लिए पराग आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

- इस कोर्स की अवधि सात माह है और यह 22 मई, 2018 से शुरू होगा।
- इस कोर्स में संपर्क (face to face) एवं स्व-अध्ययन (self study) के घटक होंगे।
- 3 संपर्क घटकों की कुल अवधि 12 दिन (5+4+3) होगी।
- स्व-अध्ययन अवधि में लेख, असाइनमेंट्स और एक फील्ड-प्रोजेक्ट शामिल होंगे।
- इस कार्स का माध्यम हिन्दी है।
- कोर्स के दौरान प्रतिभागियों को मार्गदर्शकों का लगातार सहयोग मिलेगा।
- ऑनलाईन फोरम के जरिये शिक्षकों व प्रतिभागियों के साथ नियमित चर्चाएं होंगी।
- बच्चों के बेहतरीन चुनिन्दा साहित्य के अध्ययन का मौका मिलेगा।

महत्वपूर्ण तारीखें :

कोर्स की शुरुआत : 15 मई, 2018
फॉर्म जमा कराने की अंतिम तिथि : 17 मार्च, 2018

कोर्स प्रोस्पेक्टस व आवेदन फॉर्म यहां से डाउन लोड करें : www.libraryeducators.in
अधिक जानकारी के लिए हमें कृपया ईमेल करें : parag@tatatrusts.org

'साक्षारता, शिक्षा एवं नवाचार': पुस्तक में शिक्षा के कुछ दूसरे आयाम हैं। शीर्षक के अनुकूल तीन अलग खंड। पहले दो खंड साक्षरता और शिक्षा में इतनी ही महत्वपूर्ण शोध सामग्री। साक्षरता में कालेज छात्राएं, साक्षरता और धार्मिक पूर्वाग्रह, भरतपुर में शिक्षा की पृष्ठभूमि समेत पूरे राजस्थान का शैक्षणिक परिदृष्य। एक जगह पूरे राज्य की शिक्षा व्यवस्था पर ऐसा अध्ययन मुश्किल से ही मिलेगा और पूरे आकड़ों के साथ। हर शिक्षक को जानना चाहिए। ऐसे अध्ययन को।

पुस्तक : साक्षरता शिक्षा एवं नवाचार
लेखक : राजाराम भादू
प्रकाशकः रचना प्रकाशन, जयपुर
मूल्य (हार्ड बाईंड) : 450, **पृष्ठ** : 152

नवाचार अध्ययन विशेष रूप से नोट करने लायक है। इस अंधेरे के बीच आजादी से पहले भी और और बाद में भी नवाचार की कई कोशिशें जारी हैं। नीलबाग स्कूल, कृष्णमूर्ति का ऋषि वैली, दिगंतर, बोध, लोकजुम्बिश, एकलव्य, चेतनाशाला ने अपने-अपने स्तर पर शिक्षा में परस्पर सीखते-सिखाते हुए कुछ कदम उठाए हैं। 'नीलबाग' इसमें विशेष उल्लेखनीय है और राजाराम ने पूरे विस्तार से इस स्कूल के बारे में बताया है। कर्नाटक राज्य के कोलार जिले में स्थित इस स्कूल की शुरुआत की ब्रिटिश नागरिक डेविड होर्सब्रो ने वर्ष 1972 में। देश के जाने-जाने शिक्षाविद कृष्ण कुमार, रोहित धनकर की पीढ़ी नीलबाग को बहुत श्रद्धा से याद करती है और पूरे देश को करना भी चाहिए। स्कूल का वैसे तो कोई कठोर दर्शन नहीं है पर मोटी-मोटी बातें है- शिक्षक और छात्रों के बीच आत्मीय संबंध, अनौपचारिकता, मित्रता का भाव। प्रतिर्स्पधा की कोई जगह नहीं इसीलिए न परीक्षा ली जाती, न किसी के साथ तुलना। नीलबाग में बच्चों को दंड एकदम मना। हर समय दोस्ताना व्यवहार और बच्चों को उनके मन के अनुसार पढ़ने-पढ़ाने का प्रोत्साहन। पूरा अध्ययन देश की प्रचलित, मौजूदा शिक्षा व्यवस्था के सामने एक प्रश्न। स्कूल में फीस भी नहीं है और दाखिलों में वंचित समुदायों को प्राथमिकता भी है। देखा जाए तो ऐसी शुरुआतें सरकारी स्तर पर उन सब समुदयों के बीच करने की जरूरत है जिनका अध्ययन, राजाराम की पुस्तकों में शामिल है। लेकिन अब तो केन्द्र से लेकर राज्य सरकारें भी शिक्षा को निजी हाथों में सौंप रही हैं।

गौर से देखें तो नीलबाग के स्कूल में गांधी का दर्शन- नई तालीम- सबसे ज्यादा शामिल है जिसे अन्यत्र राजाराम कुछ असफल मानते हैं। कि किसानों के बच्चों को कुछ नया चाहिए था। नीलबाग स्कूल में बच्चे आते ही सबसे पहले स्कूल की सफाई में लगते हैं। व्यावहारिक गतिविधियों का क्षेत्र भी बहुत व्यापक है जैसे काष्ठकला, ड्राइग-पेंटिंग, मिट्टी का काम, सिलाई-कढाई, पेपर कटिंग, कठपुतली, खेती, संगीत। अपनी भाषा में शिक्षा पर भी उतना ही जोर, अंग्रेजी के साथ-साथ (पृष्ठ 137)। गांधी, गीजूभाई के विचारों का विस्तार ही है नीलबाग- नई चेतना के साथ।

शिक्षा में रुचि रखने वाले हर शख्स के लिए इन दोनों पुस्तकों में अनन्त जानकारियां, प्रेरणा-बिन्दू और सीखने-सिखाने के दरवाजे हैं। एक तरफ हाशिये पर जीवन काट रहे समुदायों (जो पूरे देश में ही हैं कम ज्यादा) को जानने के चौखटे, फ्रेमवर्क हैं तो दूसरी तरफ शिक्षा की गुत्थियों को सुलझाने, समझने की दिशा में किए गए विभिन्न प्रयोगों की जानकारी और झलकियां। शिक्षा का मसला राजनैतिक ज्यादा है और अफसोस की बात यही है कि भारतीय संदर्भ में कोई भी राजनैतिक पार्टी इसे तवज्जो नहीं देती। वे जानबूझकर इससे दूर रहते हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि कभी कोई तो सत्ता, संस्थान राजाराम जी की इन पुस्तकों से कुछ सीखेगा। ◆

लेखक परिचयः कथाकार एवं लेखक हैं। शिक्षा पर लेखन एवं चिंतन उनके प्रिय विषय हैं। रेल्वे से सेवानिवृत्त हैं।
संपर्कः 9971399046; prempalsharma@yahoo-co-in, ppsharmarly@gmail-com